

विद्वत् परिषद् द्वारा समीक्षित पत्रिका

ISSN 2349-1906

साहित्य

वर्ष 9-10 संयुक्तांक-40-41 अक्टूबर-मार्च, 2025

यात्रा

साहित्यिक-सांस्कृतिक यात्रा का साक्षी

स्वाधीनता संग्राम में हिंदी साहित्य की भूमिका पर विशेष

संपादक
कलानाथ मिश्र



हिमालिनी का विमोचन करते हुए पूर्व उप प्रधानमंत्री नेपाल श्री उपेन्द्र यादव व अन्य अतिथि

पटना विश्वविद्यालय पटना के हिंदी विभाग के आयोजन में साहित्य यात्रा के संपादक प्रो. कलानाथ मिश्र, प्रो तरुण कुमार, विश्व भारती से आए प्रो मुक्तेश्वर नाथ तिवारी, डॉ. रत्नेश्वर सिंह, डॉ. इन्द्र नारायण सिंह, डॉ. अनुपम, डॉ. रमेश कुमार, डॉ. सीमा कुमारी, डॉ. कृष्ण अनुराग, डॉ. अमित कुमार मिश्र आदि विद्वतजन।



प्रो. कलानाथ मिश्र को अपनी गजल-संग्रह 'सफर के दरमियाँ' भेंट करते हुए गजलकार आसिफ रोहतासवी।



साहित्य यात्रा के यशस्वी संपादक प्रो. कलानाथ मिश्र को अपनी कविता संग्रह 'जूतों के दौर में पाँव' भेंट करते हुए डॉ. अमित कुमार मिश्र। साथ में पटना विश्वविद्यालय के हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ. विजय कुमार।

विद्वत् परिषद् द्वारा समीक्षित पत्रिका

साहित्य यात्रा

साहित्यिक-सांस्कृतिक यात्रा का साक्षी

संपादक
कलानाथ मिश्र

साहित्य यात्रा

साहित्यिक-सांस्कृतिक यात्रा का साक्षी

सदस्यता फार्म

‘साहित्य यात्रा’ विशिष्ट सदस्यता	:	1100/-
एक वर्ष (4 अंक)	:	500/- (डाक खर्च सहित)
तीन वर्ष (12 अंक)	:	1500/- (डाक खर्च सहित)
संस्थागत मूल्य (3 वर्ष)	:	1500/-
आजीवन सदस्यता	:	15000/-
विदेश के लिए (3 अंक)	:	60 डॉलर

(पटना के बाहर के चेक पर कृपया बैंक कमीशन के 40/- रुपये अतिरिक्त जोड़ दें।)

उक्त दर के अनुरूप मैं चेक / ड्राफ्ट संलग्न कर रहा हूँ। ऑन लाईन खाते में डाल दिया हूँ (रेपफरेन्स नं.) कृपया मुझे ग्राहक बना कर मेरी प्रति निम्न पते पर भिजवाएँ।

नाम :-	पद :-
पता :-	
दूरभाष 1 :	दूरभाष 2 :
शहर :	पिन नं. :-
देश :	ईमेल -
संकाय / विभाग / विद्यालय :	

भुगतान की जानकारी

नकद/बैंक रकम : रु. द्वारा

डी0डी0/प्रत्यक्ष हस्तांतरण/चेक/बैंक का नाम :

डी0डी/चेक/स्थानान्तरण संख्या : दिनांक :

दिनांक :	हस्ताक्षर (या पूरा नाम लिखें)	
----------	----------------------------------	--

ऑनलाइन हस्तांतरण विवरण :- साहित्य यात्रा, पंजाब नेशनल बैंक,
एस.के. पुरी शाखा, पटना-1

खाता क्रमांक- 6236000100016263, IFSC- PUNB0623600

वेबसाइट - www.sahityayatra.com

यहाँ से काटिए

साहित्य यात्रा

साहित्यिक-सांस्कृतिक यात्रा का साक्षी

स्वाधीनता संग्राम में हिंदी साहित्य की भूमिका पर विशेष

वर्ष-9-10

संयुक्तांक-40-41

अक्टूबर-मार्च, 2025

परामर्शी

डॉ. सूर्य प्रसाद दीक्षित

डॉ. प्रेम जनमेजय

डॉ. हरीश नवल

सम्पादकीय सलाहकार

श्री आशीष कंधवे

समीक्षक मंडल

प्रो. शैलेन्द्र कुमार चौधरी

संकायाध्यक्ष, मानविकी संकाय
(पूर्व विभागाध्यक्ष, स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग,
कॉलेज ऑफ कॉमर्स)

प्रो. प्रतिभा सहाय

(पूर्व आचार्य, स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग)

डॉ. सुजीत दूबे

(अध्यक्ष एवं एसोसिएट प्रोफेसर,
मनोविज्ञान विभाग, ए.एन. कॉलेज, पटना)

उप-संपादक

डॉ. करुणा पीटर 'कमल'

सहायक संपादक

डॉ. अमित कुमार मिश्रा

कार्यालय सहयोग

प्रिया कुमारी

साज-सज्जा

निशिकान्त / मनोज कुमार

संपादक

कलानाथ मिश्र



साहित्य यात्रा में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखकों के हैं जिनसे संपादक, प्रकाशक, मुद्रक एवं पत्रिका से जुड़े किसी भी व्यक्ति का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। सभी विवादों का निपटारा पटना क्षेत्र के अन्तर्गत सीमित है। पत्रिका में संपादन से जुड़े सभी पद गैर-व्यावसायिक एवं अवैतनिक है। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी आलेख का पुनर्प्रकाशन के पूर्व संपादक की अनुमति अनिवार्य है।

साहित्य यात्रा

साहित्यिक-सांस्कृतिक यात्रा का साक्षी

RNI No. : BIHHINO5272

ISSN 2349-1906

विश्व विद्यालय अनुदान आयोग (UGC) द्वारा पूर्व अनुमोदित

विद्वत् परिषद् द्वारा समीक्षित पत्रिका

© स्वत्वाधिकार सुरक्षित

प्रकाशित सामग्री के पुनः उपयोग के लिए लेखक,

अनुवादक अथवा साहित्य यात्रा की स्वीकृति अनिवार्य है।

संपादकीय कार्यालय

‘अभ्युदय’

ई-112, श्रीकृष्णपुरी

पटना-800001 (बिहार)

मोबाइल : 8434880332/09304302308/09835063713/9546138889

ई-मेल : sahiyayatra@gmail.com

kalanath@gmail.com

वेब साईट : http://www.sahityayatra.com

मूल्य : ₹ 100/- (एक सौ रुपये मात्र)

प्राप्ति स्थान :

पटना-

आलोक कुमार सिंह, मैगजीन हाउस, शालीमार स्टूडियो के पास,
सहदेव महतो मार्ग, बोरिंग रोड, पटना-800001

दिल्ली -

1. आर.के. मैगजीन सेन्टर, क्रिश्चियन कॉलोनी, पटेल चेस्ट,
दिल्ली, वि.वि., दिल्ली-11007
2. राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय, मंडी हाउस, नई दिल्ली

शुल्क ‘साहित्य यात्रा’ के नाम पर भेजें।

‘साहित्य यात्रा’ त्रैमासिक डॉ. कलानाथ मिश्र के स्वामित्व में और उनके द्वारा ‘अभ्युदय’

ई-112, श्रीकृष्णपुरी, पटना-800001, बिहार से प्रकाशित तथा ज्ञान गंगा क्रियेशन्स,

पटना से मुद्रित। स्वामी/संपादक/प्रकाशक/मुद्रक : प्रो. कलानाथ मिश्र।

अनुक्रम

संपादकीय	07
आपके पत्र	10
प्रकाश मनु और शशि रंजन कांत	
आलेख	
मुक्ति आंदोलन के सापेक्ष हिन्दी नवजागरण	11
प्रो. सूर्यप्रसाद दीक्षित	
भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन और हिन्दी पत्रकारिता	24
डॉ. अमर कांत कुमार	
भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन और हिन्दी कविता	39
डॉ. प्रफुल्ल कुमार	
भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन और हिन्दी उपन्यास	46
प्रो. गीता सहाय	
भारतीय स्वाधीनता संग्राम और भारतेन्दु युगीन साहित्यकार	50
डॉ. अंजु कुमारी	
भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में हिन्दी साहित्य की भूमिका	56
डॉ. माधवी	
स्वाधीनता आंदोलन और हिन्दी पत्रकारिता	60
डॉ. रीना यादव	
भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन और हिन्दी आलोचना	65
डॉ. जया सिन्हा	
स्वतंत्रता संग्राम और हिन्दी पत्रकारिता	71
डॉ. सुषमा कुमारी	
स्वतंत्रता आन्दोलन, हिन्दी रंगमंच और गाँधी	77
तेजस पूनियाँ	
स्वाधीनता आंदोलन में मैथिलीशरण गुप्त जी का योगदान	83
कंचन कुमारी	

भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन और हिन्दी आलोचना अविनाश कुमार चौधरी	87
भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन में हिन्दी साहित्य एवं मगही कथा साहित्य की भूमिका इन्दु कुमारी	92
रामधारी सिंह 'दिनकर' की रचनाओं में राष्ट्रीय चेतना राजश्री	98
हिन्दी नवजागरण और स्वतंत्रता आंदोलन : एक समीक्षा चाँदनी प्रकाश	106
हिन्दी नवजागरण और स्वाधीनता आंदोलन जूही कुमारी	111
भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में भारतेंदुयुग की भूमिका कुमारी श्वेता	116
संस्मरण	
कश्मीरी भाई साहब प्रकाश मनु	123
आलेख	
वसंत-ऋतु, होली और रंग चितरंजन भारती	145
कविता	
वसंत का आना होता डॉ. अर्चना त्रिपाठी	150

पराधीन सपनहु सुख नाही

भारतीय इतिहास के पन्नों में स्वाधीनता आंदोलन का अध्याय स्वर्ण अक्षरों में लिखा हुआ सर्वाधिक जगमगाता पहलू है।

भारतीय स्वाधीनता संग्राम में लोगों के मन में मुक्ति की कामना और उसके प्रति कृत संकल्प होने की भावना जो आई, जो स्वतंत्रता की प्रबल प्रेरणा जागी, उसके पीछे साहित्य का बहुत बड़ा योगदान है। स्वाधीनता आंदोलन के लिए प्रेरित करने वाले साहित्य के अवदान अविस्मरणीय हैं। गोस्वामी तुलसीदास जी ने रामचरितमानस में बहुत पहले ही यह भाव अभिव्यक्त कर दिया था :-
पराधीन सपनों सुख नाही

भारतीय नवजागरण का संबंध अपनी भाषा, साहित्य, संस्कृति, समाज, राष्ट्र और स्वाधीनता आंदोलन के साथ जुड़ा हुआ है। देश की स्वतंत्रता के लिए 1857 से लेकर 1947 के बीच जो आंदोलन हुए और उनके साथ लेखकों, कवियों और पत्रकारों ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, उनकी गौरव गाथा हमें प्रेरणा देती है। हम स्वतंत्रता के मूल्य को बनाए रखने के लिए सदैव कृत संकल्प रहे हैं।

हम जानते हैं कि साहित्य और समाज एक-दूसरे से प्रभावित होते हुए चलते हैं। साहित्य में समाज प्रतिध्वनित होता है और साहित्य समाज तथा मनुष्य के अंतर जगत का अन्वेषण करते हुए चलता है। वैसे तो हर देश की तरह भारतवर्ष भी हर युग में अपनी अस्मिता के लिए संघर्षरत रहा है, लेकिन स्वाधीनता आंदोलन से पहले जो लड़ाइयाँ लड़ी गई उसका क्षेत्र और स्वरूप समग्र राष्ट्रीय परिपेक्ष में नहीं था। स्वाधीनता आंदोलन के दौर में पहली बार राष्ट्रवाद की भूमिका विकसित हुई और संपूर्ण भारत को एक होने का अनुभव प्राप्त हुआ। पहले भी कई ऐसे दौर आए जब संपूर्ण, अखंडित भारत एक शासन के तहत पल्लवित तो हुआ लेकिन ऐसा समय बीच-बीच में बहुत कम समय के लिए रहता रहा; अधिकांशतः देश अलग-अलग प्रदेशों में बँटा ही रहा। जिसका परिणाम विदेशी आततायियों के आक्रमण और लूटपाट के रूप में भुगतना पड़ा। अंग्रेजी सत्ता के विरुद्ध चलने वाले स्वाधीनता आंदोलन का एक निश्चित समय निर्धारित नहीं किया जा सकता है क्योंकि छिटपुट कई घटनाएँ घटित होती रहती थी। 1857 के सिपाही विद्रोह के बाद यह शृंखला सिलसिलेवार तरीके से चलता रहा और आजादी की लड़ाई उत्तरोत्तर जोर पकड़ती गयी। स्वाधीनता आंदोलन के अवलोकन से यह ज्ञात होता है कि इसकी कई धाराएँ प्रवाहित होती रहीं। आंदोलन में सक्रिय नेताओं के विचारों के अनुकूल आंदोलन की धाराएँ विकसित होती रहीं। लक्ष्य एक था लेकिन राह अलग-अलग। कोई शांतिपूर्वक आंदोलन कर रहा था तो कोई सशस्त्र विद्रोह को समर्पित था लेकिन हर व्यक्ति स्वाधीनता के लिए संघर्षरत था। इस आंदोलन की सबसे बड़ी महत्ता यह है कि पूरा जन-सैलाब इस आंदोलन में उमड़ पड़ा था। इससे पहले जो लड़ाइयाँ लड़ी जा रही थी, वह राजा और सिपाहियों के द्वारा, सैनिकों के द्वारा, लड़ी जा रही थी। लेकिन इस लड़ाई में हर एक व्यक्ति सैनिक की भूमिका में था। सभी